JOHN LOCK -REFUTATION OF INNATE IDEAS

जॉन लॉक - जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

बुद्धिवादी दार्शनिक देकार्ते, स्पिनोजा और लाइबनितज़ का मानना है कि समस्त ज्ञान की उपज बुद्धि है और सम्पूर्ण ज्ञान जन्मजात प्रत्यय के रूप में बुद्धि में ही निहित रहते हैं।ये बाहर से नहीं आते, ज्ञान की उत्पत्ति, प्रमाणिकता और सार्वभौमिकता इन्हीं पर निर्भर है। ये जन्मजात, सार्वभौम और इन्द्रियानुभव-निरपेक्ष या प्रागनुभविक हैं।बुद्धिवादियों की यही मान्यता लॉक को मान्य नहीं है।लॉक के अनुसार कोई भी ऐसा प्रत्यय नहीं जो जन्मजात हो, हमें जो भी ज्ञान प्राप्त होता है वह अनुभूतियों के आधार पर होता है।

लॉक, बुद्धिवादियों के द्वारा कुछ नियम के प्रत्यय जिन्हें जन्मजात माना है का जोरदार खण्डन करते हैं जैसे - तादात्मय नियम(Law of Identity),विरोध नियम(Law of Contradiction),कारणता का नियम(Law of Causation),समरूपता नियम(Law of Uniformity of Nature)।

1. बुद्धिवादियों के इस कथन का की तादातमय नियम और विरोध नियम का प्रत्यय जन्मजात है का खंडन करते हुए लॉक ने कहा कि छोटा बच्चा भी यह भली भांति जानता है की गुड़िया और दूध पीने का ग्लास एक ही वस्तु नहीं है बल्कि दोनों में भेद है। किंतु यह कहना कि बच्चे में यह ज्ञान तादातमय नियम या विरोध नियम के कारण है हास्यास्पद जान पड़ता है। यदि यह मान भी लिया जाए की इनका प्रत्यय है जन्म से ही बच्चों में होता है तो भी उचित नहीं कहा जा सकता क्योंकि जन्मजात प्रत्यय होता तो प्रत्येक बालक, मूर्ख ,जंगली, पागल आदि सभी को यह ज्ञान होता।कुछ अज्ञानी ऐसे भी हैं जिन्हें बारह तक गिनती नहीं आती।अनेक पागलों को अपनी आत्मा की अनुभूति नहीं होती।ईश्वर की सहज प्रतीति भी सबों को नहीं होती। अनेक नास्तिक है जो ईश्वर को मानते ही नहीं।अतः बुद्धिवादियों का यह कथन परस्पर विरोधी जान पड़ता है। लॉक का कहना है कि बुद्धिवादियों का यह तर्क ना तो तर्कपूर्ण लगता है और न आत्मसंगत। यह कैसे संभव है कि मन में कोई प्रत्यय हो और उसकी चेतना ना हो।

2. बुद्धिवादियोंका यह मानना है कि प्रकृति या वस्तु जगत में समरूपता नियम होता है या सामंजस्यता नियम होता है।उस सामंजस्यता के कारण ही जगत में एकरूपता देखी जाती है।लॉक के अनुसार इस तरह के प्रत्यय का जन्मजात होने का प्रमाण नहीं है। इसे प्रत्ययों की अनुभव सापेक्षता से भी प्रमाणित किया जा सकता है किसी लाल सेव को

देखकर उसके रंग के प्रति सर्वसम्मति हो सकती है परंतु यह कहना गलत होगा कि लाल सेव का प्रत्यय जन्मजात है।अतः यदि आत्मा ईश्वर वैचारिक नियमों आदि के प्रति सर्वसम्मति का भाव रहता है तो उन्हें जन्मजात नहीं कहा जा सकता। परंतु हमारा अनुभव साक्षी है कि इनमें कोई भी सर्वसम्मति नहीं कहा जा सकता।

3. नैतिकता के प्रत्यय भी कुछ बुद्धिवादियों के अनुसार जन्मजात हैं, क्योंकि इस पर आम सहमति है।इसके विरुद्ध लॉक का तर्क है कि कोई भी नैतिक प्रत्यय सर्वसम्मत नहीं है प्रत्येक समाज के लिए देश और परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग नैतिक नियम होते हैं।अहिंसा एवं दया उच्च कोटि के नैतिक प्रत्यय हैं परंतु विश्व में इन को मानने वाले और जीवन में सचमुच उतारने वाले कितने लोग हैं ? अभी भी कुछ असभ्य जातियां मनुष्य के कच्चे मांस का भक्षण करते हैं और उसके रक्त का पान करती है। चोरी,हत्या आदि को नैतिक नियम के विरुद्ध माना जाता है पर स्पार्टा निवासी इसे अपना धर्म समझते हैं। न्याय के सिद्धांत को लोग इसलिए नहीं स्वीकारते वह जन्मजात है बल्कि इसलिए स्वीकारते हैं कि वह हितकर है। न्याय का सिद्धांत अलग-अलग देशों में अलग-अलग है। अतः नैतिक नियम को जन्मजात नहीं माना जा सकता है। यदि हम अंतरात्मा को ही जन्मजात नैतिक नियमों का प्रमाण मान लेते हैं तो विरोधी नैतिक नियमों को भी जन्मजात मानना पड़ेगा। क्योंकि जहां एक व्यक्ति अपनी अंतरात्मा से अभियोग लगाता है वही दूसरा व्यक्ति अपनी अंतरात्मा से उसे टाल देताहै(As if conscience be a proof of innate principle contraries may be innate principle, since some men with the same bent of conscience prosecute what others avoid -An Essay Cocerning Human Understanding, P1,Ch3)।

4. कुछ लोग ईश्वर के प्रत्यय को जन्मजात मानते हैं। लॉक का कहना है की विश्व में कई ऐसी जंगली एवं असभ्य जातियां हैं जिन्हें ईश्वर का नाम भी नहीं ज्ञात है। असंख्य व्यक्ति नास्तिक है यदि ईश्वर का प्रत्यय सब में जन्मजात रहता तो ऐसी बातें नहीं होती। इसके अतिरिक्त ईश्वर को मानने वाले भी ईश्वर के स्वरूप को लेकर काफी मतभेद रखते हैं। यही कारण है कि विभिन्न धर्मावलंबी एक दूसरे का रक्त पीने के लिए पागल बने रहते हैं। अतः ईश्वर के प्रत्यय को जन्मजात नहीं कहा जा सकता।

5. आत्मा का प्रत्यय भी सार्वभौम एवं जन्मजात नहीं हो सकता क्योंकि आत्मा संबंधी सिद्धांत के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है, जैसे कुछ विद्वानों के अनुसार आत्मा का मौलिक गुण चेतना है, तो कुछ की मान्यता है कि यह उसका आकस्मिक गुण है। हम सामान्य लोक व्यवहार में देखें तो बहुत से ऐसे लोग मिल जाएंगे जो इस बात से अनभिज्ञ होते हैं की आत्मा क्या है ? पागलों, मूर्खों, बालकों में तो इसका बिल्कुल भान नहीं होता। अतः आत्मा का प्रत्यय भी सार्वभौम नहीं कहा जा सकता।

6. बुद्धिवादियों का यह तर्क भी गलत है की कुछ नियम और सिद्धांत स्वयंसिद्ध

होने के कारण जन्मजात कहे जा सकते हैं।उनका कहना है कि यदि इन्हें सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ती तो ये निश्चय ही जन्मजात हैं। आत्मा के प्रत्यय, कारणता-नियम आदि स्वयं सिद्ध होने के कारण जन्मजात कहे जा सकते हैं। लॉक इस तर्क का खंडन करते हुए कहते हैं कि तथाकथित स्वयंसिद्ध नियम किसी खास दृष्टिकोण से ही स्वयंसिद्ध कहे जाते हैं और अन्य दृष्टिकोण से इनकी स्वयंसिद्धता संदेहात्मक हो जाती है, उदाहरण के लिए यूक्लिड ज्यामिति कि कई स्वयंसिद्धियां ठोस ज्यामिति में स्वयंसिद्ध नहीं रह पाती। अतः स्वयंसिद्धता के आधार पर किसी नियम या सिद्धांत को जन्मजात नहीं कहा जा सकता।